

ISSN - 2320-740X

शारदा

UGC-CARE listed and Peer-Reviewed Journal



संरक्षकः

आचार्यः श्रीनिवास वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

आचार्यः सि. एस्. एस्. नरसिंहमूर्तिः

सम्पादकौ

डा. राघवेन्द्रभट्टः

डा. विश्वनाथहेगडे



केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेनस्थापितः

राष्ट्रियमूल्याङ्कनप्रत्यायनपरिषदा A++ श्रेण्या प्रत्यायितः

श्रीराजीवगान्धीपरिसरः

मेणसे, शृङ्गेरी - ५७७१३९, (कर्णाटकराज्यम्)

शारदा

UGC-CARE listed and Peer-Reviewed Journal

ISSN - 2320-740X

संरक्षकः

आचार्यः श्रीनिवास वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

आचार्यः सि. एस्. एस्. नरसिंहमूर्तिः

सम्पादकौ

डा. राघवेन्द्रभट्टः

डा. विश्वनाथहेगडे



केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेनस्थापितः

राष्ट्रीयमूल्याङ्कनप्रत्यायनपरिषदा A++ श्रेण्या प्रत्यायितः

श्रीराजीवगान्धीपरिसरः

मेणसे, शृङ्गेरी - ५७७१३९, (कर्णाटकराज्यम्)

सम्पादकीयम्

Sl. No	Article Name	Author	Page No
1	अनुषङ्गन्यायः	प्रो. सुब्राय वि.भट्टः	01
2	शब्दशक्तिः शब्दोऽपि शाब्दबोधे भासते	डा. सिहेच्. एस्. एस्. नरसिंहमूर्तिः	05
3	देवताप्रसादस्य प्रयोजकत्वविवेचनम्	प्रो. सूर्यनारायणभट्टः	10
4	श्रीरुद्राध्याये वेदान्ततत्त्वाविर्भावः	डा. गणेश ईश्वर भट्टः	15
5	अभिनवभारत्यां शान्तरसविचारः	डा. राघवेन्द्रभट्टः	20
6	मनोवृत्तिप्रपञ्चनम्	डा. दयानन्द ए. आर्.	26
7	ध्वनितत्त्वावबोधे ध्वन्यालोकप्रभारूपायाः 'ध्वन्यालोकप्रभा'याः प्रभा	डा. सौम्यजित् सेनः	33
8	स्वप्नसृष्टिमीमांसा	डॉ. राघवेन्द्र शर्मा	43
9	चतुर्थ्यर्थनिरूपणे जगदीशगदाधरयोर्मतभेदः The Krishnapadi Commentary of Bhagavata	डा. देवन् ई. एम्	53
10	Purana and the Treasure House of Manuscripts in Kerala	Maneesha S	59
11	A Brief Overview of Ancient Indian Geometry	Vijayakumari T. Chilakwad	66
12	शिक्षायां शैक्षिकप्रविधेः आवश्यकता	डा. बी. नरेशकुमारनायकः	71
13	वर्षप्रश्नः	Dr. Eswaran E. N.	83
14	सद्यः परनिर्वृत्तिः - एकं विवेचनम्	Dr. Chandrakala R. Kondi	89
15	ब्रह्मसूत्रे बौद्धसन्दर्भपरिशीलनम्	Dr. Nepal Das	95
16	कर्मणां विद्यायाम् उपयोगः उत विविदिषायाम्?	डा. विश्वनाथ हेगडे	99
17	व्याकरणदर्शने कालशक्तिः	डा. प्रियव्रतमिश्रः	105
18	इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य	डा. प्रमोदभट्टः	110
19	Asyavāmiya Sukta: An Overview	Arya S Vijayan	116
20	संपन्नो व्रीहिः इत्यत्र व्रीहिपदोत्तरैकवचनार्थः गदाधरभट्टाचार्यमते	डा अजिमोन् सि एस्	125
21	राजशेखरस्य कविसमाजायवदानम्	डॉ. सौरभ दुबे	131
22	प्रथमलक्षणार्थविचारः	डा. श्रीराम ए.एस्.	140
23	दिनकरी-प्रभा-मञ्जूषामतदिशा	सुव्रत-गायेनः	147

राजशेखरस्य कविसमाजायवदानम्

डॉ. सौरभ दुबे

सहायकाचार्यः - साहित्यविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीय संस्कृत-

विश्वविद्यालयो, नवदेहली - 16

वैक्रमाब्दस्य संवत्सरस्य नवमदशमैकादशशताब्दानां कालः भारतीयसंस्कृतवाङ्मयस्य विविधशाखानां समीक्षणपरीक्षणविवेचनानां कालो बभूव। अस्यां शतकत्रय्याम् एकत्र आचार्यशंकर-कुमारिल-मण्डन-उद्योतकर-उदयनसदृशः दार्शनिका विद्वांसोऽभूवन्। अपत्र बौद्धविद्वत्सु धर्मकीर्तिकमलशीलप्रभृतयः, जैनविद्वत्सु पाल्यकीर्त्यादयः विद्वांसा उदभवन्। तत्रैव साहित्यशास्त्रस्य विद्वत्सु दण्डिवामनानन्दवर्धनादयः रसध्वन्यलङ्काररीतिप्रभृतिषु विषयेषु गम्भीरतम-मीमांसाभिः साहित्यभाण्डागारं वर्धयामासुः। एषु शताब्देषु साहित्यसम्बन्धिरचनानां केन्द्रद्वयी आसीत्- काश्मीरः कान्यकुब्जश्च काश्मीरः श्रव्यकाव्यप्रणयनार्थं प्रसिद्धः कान्यकुब्जश्च दृश्यकाव्यरचनार्थं विश्रुत आसीत्। राजशेखरः कान्यकुब्जाधिपतेः महेन्द्रपालस्य तदुत्तरं महीपालस्य चोपाध्यायपदवीमलञ्चकार। उक्तमपि-

बालकविः कविराजो निर्भयराजस्य तथोपाध्यायः।¹

इत्यस्य परम्परया आत्मा माहात्म्यमाह्वः॥

किमपरमपरैः परोपकारव्यसननिधेर्गणितैर्गुणैरमुष्यः²

रघुकुलतिलको महेन्द्रपालः सकलकलानिलयः स यस्य शिष्यः॥

मम्मटाभिनवगुप्तक्षेमेन्द्रादीनामाचार्याणामुद्धृतत्वात् राजशेखरः महाराष्ट्रचूडामणेः अकाल जलदस्य चतुर्थःप्रपौत्रः दुर्दुकस्य च पुत्र आसीत्। माता च शीलवती अतःराजशेखरस्य समयः दशमशताब्दस्य मध्यभागः (930-977) मन्यते। यथोक्तम्- 'तदा मुष्यायणयमहाराष्ट्रचूडामणेरकालजलदस्य चतुर्थो दौर्दुकिः शीलवतीसूनुरुपाध्यायश्रीराजशेखर इत्यपर्याप्तं बहुमानेन'³।

कृतीनां विषये राजशेखरस्य पञ्च रचनाः प्राप्तास्सन्ति तथाहि- कर्पूरमञ्जरी (सदृकम्) विद्वशालभाजिका (नाटिका) बालरामायणं (नाटकम्) बालभारतं काव्यमीमांसा चेति-

बभूव वल्मीकभवःकविः पुरा

ततःप्रपदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।

1 कर्पूरमञ्जरी 1-8

2 विद्वशालभाजिका, अंक-1

3 बालरामायण, प्रस्तावना-1

वेद-पुराण-साहित्य-साहित्यशास्त्र-व्याकरण-दर्शन-ज्योतिष-भारतीय
संस्कृति आदि विविध विषयों पर विषय-विशेषज्ञ मूर्धन्य
विद्वानों के शोध-आलेखों का उत्कृष्ट संग्रह

शाश्वती

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ

Śāśvatī

Dr. Santosh Kumar Pandey Commemoration Volume



सम्पादक मंडल

शैलेश कुमार मिश्र • कंजीव लोचन
धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी • अवधेश कुमार पाण्डेय

॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

700
—*—

शाश्वती

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ

Śāśvatī

Dr. Santosh Kumar Pandey Commemoration Volume

वेद-पुराण-साहित्य-साहित्यशास्त्र-व्याकरण-दर्शन-ज्योतिष-भारतीय
संस्कृति आदि विविध विषयों पर विषय-विशेषज्ञ मूर्धन्य
विद्वानों के शोध-आलेखों का उत्कृष्ट संग्रह

सम्पादक मंडल

शैलेश कुमार मिश्र • कंजीव लोचन
धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी • अवधेश कुमार पाण्डेय



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित । इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, सम्पादक मंडल की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

इस स्मृतिग्रन्थ में प्रकाशित आलेख सम्बद्ध लेखकों के निजी विचार हैं। किसी विवाद की स्थिति में उसका सम्मत दायित्व सम्बद्ध लेखक का होगा। सम्पादकगण एवं प्रकाशक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

शाश्वती-डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ

ISBN : 978-93-94829-29-9

प्रकाशक :

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)


के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129


वाराणसी 221001

दूरभाष : +91 542 2335263, 2335264

e-mail : chauhambasurbharatiprakashan@gmail.com

website : www.chauhamba.co.in

 @chauhambabooks

 @chauhambabooks

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2022

₹ 4995.00

वितरक :

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस

4697/2 ग्राउण्ड फ्लोर, गली न. 21-ए

अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली 110002

दूरभाष : +91 11 23286537, 41530947 (मो.) +91 9811104365

e-mail : chauhambapublishinghouse@gmail.com

*

अन्य प्राप्तिस्थान :

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

4360/4, अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली 110002

*

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)

पोस्ट बॉक्स न. 1069

वाराणसी 221001

मुद्रक : ए.के. लिथोग्राफर, दिल्ली

प्रकीर्णविभाग

- | | |
|---|------|
| 166. कीर्तिर्यस्य स जीवति- म.म.प्रो.उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' | 1202 |
| 167. डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं संस्कृत-साहित्य- प्रो. अर्कनाथ चौधरी | 1205 |
| 168. वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः- प्रो. जयनारायण पाण्डेयः | 1209 |
| 169. तुलसी रामचरितमानस की संचारिक लोकप्रियता में अवधी
के योगदान का विश्लेषण- बलराम सिंह | 1212 |
| 170. Need of change in Thrust Areas of Sanskrit Research
- Dr. Parag B Joshi | 1214 |
| 171. ज्ञान का आगार - संस्कृत भाषा- डॉ. मीरा मिश्रा | 1220 |
| 172. शिवसङ्कल्पं जीवनम्-डॉ. सौरभ दुबे | 1223 |
| 173. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् और छात्र प्रतिक्रिया
प्रणाली की प्रक्रिया- डॉ. रुचि त्रिपाठी | 1227 |
| 174. Context To Meaning: A New Age of
Communication- Dr. Samira Sinha | 1236 |
| 175. भारतवर्ष में वन और पर्यावरण- डॉ. कंजीवलोचन | 1242 |
| 176. शिक्षा और ज्ञान : मनुष्यता के सूत्रधार- डॉ. जिन्दर सिंह मुण्डा | 1251 |
| 177. A Glimpse of Indian Calendars- Dr Reena Nand | 1257 |
| 178. राजनीति एवं नैतिकता- डॉ किरण झा | 1264 |
| 179. गुरुतत्त्व विमर्श (काश्मीर शैवागम एवं आचार्य अभिनवगुप्त के परिप्रेक्ष्य में)
-डॉ. मणि शंकर द्विवेदी | 1271 |
| 180. भारत में मानवाधिकार की चुनौतियाँ- डॉ. ऋचा सिंह | 1281 |
| 181. झारखंड की उच्च शिक्षा : समस्या और चुनौतियाँ- डॉ. शत्रुघ्न कुमार पाण्डेय | 1286 |
| 182. Transgender in Indian society:
A glimpse through ages- Dr Shashi Kiran | 1305 |
| 183. शोक और विरह की छायावादयुगीन मान्यताएँ- डॉ. सुमिता ज्योति | 1312 |
| 184. भ्रष्टाचार की समस्या एवं समाधान : एक दार्शनिक विवेचन- डॉ. शारदा बंदना | 1317 |
| 185. समावेशी शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ- डॉ. रेणु कुमारी | 1324 |
| 186. Importance of Humanity in Indian Perspective- Pratiyush Pandey | 1330 |
| 187. लेखक-सूची | 1334 |

.....

शिवसङ्कल्पं जीवनम्

डॉ. सौरभ दुबे

सुखदुःखमोहस्वरूपे स्थावरजङ्गात्मके निखिलब्रह्माण्डे सर्वोऽपि मानुषजीवः अद्यत्वे आधिदैविकादितापत्रयेण आबद्धः दृश्यते। तथा सति तादृशमानवदुःखोन्मोचनोपायाः सर्वविधेषु धर्मेषु पाश्चात्यसंस्कृतिषु च निरूपिता वर्तन्ते। इदं दुःखं मानवं किमर्थं बाधत इति चेत्तद्विधि महाभारतकारेण निगदितम्-

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

बन्धाय विषयासङ्गः मुक्त्यै निर्विषयं मनः॥¹

अर्थात् मानवः ऐहिक-आमुष्मिकवस्तुषु जागतिकपदार्थेषु स्रक्चन्दनस्वर्गादिषु तज्जन्यप्राप्तफलेषु नित्यत्ववद्बुद्ध्या उत्थितरागमलावलेपेन मनः लिम्पति। नित्यवस्तुनि ब्रह्मणि अनित्यत्वबुद्धियोजनेन क्षणिकसुखोपलब्ध्या आत्मानं सुखिनं मत्वा स श्वसितीति लक्ष्यते गतेपि सुखे स दूयमानो अनुभूयते। अतः स जीवः त्रिविधतापेन व्यथते। मानवजीवनं ध्येयपरं कर्तुन्तावत् दैहिकक्लेशेभ्यः मानवेन स्वत्वं वारणीयम्। तदागतस्य जीवस्य जीवनोद्देश्यं किमिति मत्वा तथा वर्तनीयम्। जीवनं शिवसङ्कल्पं विधातुं तत्तच्छास्त्रेषु उपाया दर्शिताः। लक्ष्यानुध्यानापेक्षया, निजलक्ष्यमार्गे अभिनिविशमानः पान्थः उद्देश्यपूर्तौ प्रतिबन्धकान् विघ्नान् उल्लङ्घ्य गन्तव्यतामासादयति तदैव जीवनस्य शिवसङ्कल्पता सामर्थ्यञ्च वदितुं शक्यम्। कालिदासस्य पार्वती शिवजाग्निना धूलिधूसरितेन मदनेन भग्नमनोरथा यदा जाता ततः प्रभृति आत्मानमाकलय्य लक्ष्यस्य सम्भवतासम्भवेत्यादिविषयं न्यग्भाव्य केवलां शिवविषयकभर्तृतां भवविषयकवल्लभतां चार्जयितुं भीष्मसमाधिं जग्राह। तत्रोक्तमपि-

इयेष सा कर्तुमवन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।

अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः॥²

इदं तपस्ययैकसाध्यं तदतिरिक्तैकसाध्यन्न इत्येवंविचार्य तथा नगपतिकिशोरी प्रावर्तत । अस्मिन् विषये मनुनाप्युक्तं यद् किमपि वस्तु दुर्लभं दुष्करं प्राप्त्या कठिनतमं नयनपारावारं वर्तते। तत्तपस्यामात्रप्राप्यं भविष्यति। तद्यथा-

यद्दुष्करं यद्दुरापं यद्दुर्गं यच्च दुस्तरम्।
तत्सर्वं तपसा प्राप्यं तपो हि दुरतिक्रमम्॥³

ISSN : 2455-717X



व्युत्पत्ति VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक

प्रो.शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक

डॉ.विजय गुप्ता

Year : 2023

Vol. 01

Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

Scanned with ACE Scanner

ISSN : 2455-717X



व्युत्पत्ति VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक

प्रो. शिवशंकर मिश्र

सह-सम्पादक

डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2023

Vol. 01

Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)



अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	गुणदोषौ बुधो गृहत्रित्यत्र साधर्म्यधर्मविचारः	डॉ. सौरभदुबे	01
2.	शृङ्गारप्रकाशे क्लृप्तस्य एकार्थीभावसम्बन्धस्य समीक्षणम्	बद्रीविशालपाण्डेयः	05
3.	अनुपलब्धिप्रमाणविमर्शः (सिद्धान्तबिन्दुवेदान्तपरि.....	जूही गर्ग	11
4.	प्रश्नशास्त्रफलविमर्शः	प्रिया शर्मा	21
5.	शैवाद्वैतदर्शनयोः ब्रह्मशिवतत्त्वयोः तुलनात्मकविवेचनम्	अनूपत्रिपाठी	26
6.	समसामयिकसन्दर्भेषु सम्राजः अशोकस्य प्राकृत.....	रूपमदासः	35
7.	तद्वितार्थविमर्शः	सन्तोषकुमारमिश्रः	48
8.	आपस्तम्बधर्मसूत्रसम्मत स्नातक..... : एक पर्यालोचन	डॉ. बालखडे भूपेन्द्र अरूण	53
9.	सरस्वतीकण्ठाभरणस्य कारकाधिकरण का स्वरूपविमर्श	अंकुश कुमार	66
10.	श्रीबोधेन्द्रकृत 'नामामृतरसायनम्' — एक दृष्टि	अंकुर नागपाल	78
11.	आधुनिक संस्कृत वाङ्मय और बाल-साहित्य	विपुल शिव सागर	89

गुणदोषौ बुधो गृह्णन्वित्यत्र साधर्म्यधर्मविचारः

- डॉ. सौरभदुबे*

कुतो वा नूतनं वस्तु वयमुत्प्रेक्षितुं क्षमाः ।

वचोविन्यासवैचित्र्यमात्रमत्र विचार्यताम् ॥

इति न्यायात्किञ्चित्त्विचारः अत्र प्रस्तूयते । उप समीपे, मीयते परिच्छिद्यते अनयेति उपमा । आतश्चोपसर्गे¹ करणे अङ्गि पङ्कजादिवद्योगरूढं² यद्वा उपमीयते इति उपमा । आतश्चोपसर्गे भावे अङ्गत्यये उपमाशब्दः अभिव्यज्यते ।

उपमाशब्दस्य सादृश्यमित्यर्थः । सुन्दरसादृश्यम् उपमालङ्कारः इति कथ्यते । उपमालङ्कारस्य लक्षणं कुवलयानन्दग्रन्थे श्रीमदप्पय्यदीक्षितवर्यैरेवं विहितम् –

उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः ॥³

यत्र सादृश्यलक्ष्मीः द्वयोः उल्लसति सा उपमेति अन्वयः ।

यत्र यस्मिन् काव्ये सादृश्यलक्ष्मीः द्वयोः उपमानोपमेययोः उद्भूतसादृश्यम् अथवा व्यङ्ग्यमर्यादां विना चमत्कृतिजनकं सादृश्यम्, यद्वा सहृदयहृदयाह्लादविषयकारि, उल्लसति प्रकाशते तत्र उपमालङ्कारः इत्यस्य अर्थः । सहृदयो नाम येषां काव्यानुशीलनाभ्यासवशाद्विशदीभूते मनोमुकुरे वर्णनीयतन्मयीभवन्योग्यता ते स्वहृदयसंवादभाजः सहृदयाः ।⁴

* सहायकाचार्यः, साहित्यविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली - 16

1 सिद्धान्तकौमुदी 3.3.106

2 नागेश्वरी, काव्यप्रकाशः, पृ.220

3 कुवलयानन्दः, कारिका- 4

4 ध्वन्यालोकः, प्रथमपरिच्छेदः

ISSN 2454-1230

नवदशोऽङ्कः, XIXth Issue

जनवरी - जून , 2024

January - June, 2024

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अंजूसेठः

श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

सम्पादकौ

डॉ. नितिनकुमारजैनः

डॉ. आरती शर्मा

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अञ्जुसेठः

श्री अरुणकुमामंगलः (अधिवक्ता)

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

सम्पादकमण्डलम्

प्रो. बलरामसिंह, निदेशकः, इन्स्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड साइंसिस, यूएमएसएस, डार्टमाऊथ, यू.एस.ए.
प्रो. मिलेना ब्रातोवा, वाइस डीन, फैकल्टी ऑफ क्लासिकल एन्ड मॉडर्न फिलोलॉजी, सोफिया बुल्गारिया
डॉ. मुरलीधरपण्डा, निदेशकः, इन्टरनेशनलसंस्कृत अकेडमी, साउथ अफ्रीका
डॉ. अपर्णाधीरखण्डेलवालः, School of Indic Studies, Institute of Advanced Sciences, Dartmouth, MA, USA

संस्कृतभाषा-सम्पादकमण्डलम्

डॉ. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वरु, सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
डॉ. बि. कामाक्षम्मा, सहायकाचार्या, साहित्यविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
डॉ. एल. सविता आर्या, सहायकाचार्या, व्याकरणविभागः, कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयः, दरभंगा
डा. ए. चारुकेशः, सहायकाचार्यः, शिक्षाविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः तिरुपति (आ.प्र.)
डा. सौरभदुबे, सहायकाचार्यः, साहित्यविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

हिन्दीभाषा-सम्पादकमण्डलम्

डॉ. अजयकुमारः, सहायकाचार्यः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
डॉ. कैलाशचन्द्र मीणा, सहायकाचार्यः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
डॉ. भारतीकौशलः, सहायकाचार्या, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
डॉ. रमा आर्यः, सहायक-प्राध्यापिका, श्रीपीताम्बरपीठसंस्कृतमहाविद्यालयः, दतिया, मध्यप्रदेशः

आङ्ग्लभाषासम्पादकमण्डलम्

डॉ. कामना विमल, सहायकाचार्या, संस्कृतविभागः, दौलतराममहाविद्यालयः, दिल्लीविश्वविद्यालयाधीनस्थः, नवदेहली
डॉ. छगनलाल शर्मा, सहायकाचार्यः, राजाबलवन्तसिंह महाविद्यालयः, आगरा, (उ.प्र.)
डॉ. जितेन्द्रकुमारः, सहायकाचार्यः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीविभागराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
डॉ. ए. वैष्णवी, सहायकाचार्या, शिक्षाविभागः राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः तिरुपति (आ.प्र.)

प्रकाशनसमितिसदस्याः

अध्यक्षः	प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी
प्रकाशनसमितेः उपाध्यक्षः	प्रो. अञ्जुसेठः
प्रकाशनसमितेः सचिवः	श्री अरुणकुमारमङ्गलः (अधिवक्ता)
प्रकाशनसमितेः सहसचिवे	डा. कामनाविमलः, डॉ. रमा आर्या
कोषाध्यक्षः	श्रीदिनेशकुमारवर्मा

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

प्रबन्ध सम्पादकीय

शुभकामनासन्देशः

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 18 की समीक्षा

1.	तिङ्र्थनिरूपणम्	डॉ. सुधाकरमिश्रः	1
2.	व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहासः	डॉ. शिवदत्त आर्यः	7
3.	शिक्षाक्षेत्रे ऐतिहासिकानुसन्धानोपागमः	डॉ. आरती शर्मा	20
4.	दार्शनिकानुसन्धानोपागमः	डॉ. सुनीलकुमारशर्मा	26
5.	दर्शनान्तरेषु पदार्थतत्त्वनिर्वचनम्	डॉ. जगत् ज्योतिपात्रः	31
6.	उपमास्वरूपविमर्शः	डॉ. सौरभदुबे	37
7.	मानवजीवने आत्मानुशासनाय संस्कृतस्य उपादेयता	डॉ. प्रज्ञा	44
8.	अप्यदीक्षितस्य व्याकरणवैभवम्	मनोजकुमारगुप्ता	48
9.	महाभाष्यप्रदीपव्याख्यातृपरिचयः	शङ्खशुभ्रगच्छितः	55
10.	बृहत्संहितायां निरूपितो भूकम्पविचारः	दिवाकरशर्मा	66
11.	मनुस्मृतौ वर्णिताः दण्डस्य प्रकाराः	ध्वनिका सूद	71
12.	व्यक्तित्वपक्षेषु रुचेः महत्त्वम् उपयोगश्च	ज्योतिनाथः	79
13.	पूर्वकारिकोक्तरीत्या अग्निमुखविधिः एकम्- परिशीलनम्	श्री विष्णुदास देशपाण्डे	85
14.	सिद्धान्तज्यौतिषे अक्षक्षेत्राणां महत्त्वम्	गिरीशभट्टः बि.	96
15.	अधिगम व्यवहार सम्बद्ध उपकरण निर्माण एवं अध्ययन	डॉ. नितिन कुमार जैन एवं दुर्गेश त्रिपाठी	105
16.	विश्व में वैदिक ज्ञान 'योग' का नवप्रवर्तनीय उपयोग	डॉ. विकास शर्मा	112
17.	आधिदैविक एवं आधिभौतिक दुःखों के याज्ञिक उपचार	डॉ. वेणुधर दाश	122
18.	महाभारत में पर्यावरण चेतना	नकुल कुमार साहु	127
19.	स्वास्थ्य रहने के लिए प्राणायाम की प्रासंगिकता (योगशास्त्र के अनुसार अभ्यास)	दिवाकर शर्मा	132
20.	भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व	कणिका	140
21.	भारतीय ज्ञान परम्परा का वैविध्य	डा. वीणा मिश्रा	144
22.	Efficacy of multiple intelligence-based instruction models for school teaching	Prof. K. Ravishankar Menon, Dr Suneel Kumar Sharma & Sanjay Bhardwaj	151
23.	Importance of Mitāhār in Yoga Philosophy	Prof. Subash Ch. Dash & Sagar Mantry	158

उपमास्वरूपविमर्शः

डॉ. सौरभदुबे

सहायकाचार्यः, साहित्यविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

अस्मिन् शोधपत्रे उपमालङ्कारविचारो विधीयते। तत्र उपमोपजीव्यशास्त्राणां वेदनिरुक्तव्याकरणन्यायसूत्रबादरायण-सूत्राणामनु- रोधात् उपमापथम् उत्तरोत्तरं कथमाविर्भूतमिति तदनन्तरं काव्यशास्त्रान्तर्गतनाट्यशास्त्रकाव्यालङ्कारकाव्या-लङ्कारसूत्रवृत्तिकाव्यादर्शरुद्रटकुन्तकभोजराजादिग्रन्थसाहित्यदर्पणकुवलयानन्दरसगङ्गाधरचन्द्रालोकादिग्रन्थधिया उपमा-स्वरूपं कथमासीदिति पुनश्च उपमाकारणसामग्री का, उपमायाः प्रथमन्यासविच्छितिः, उपमोदयविचारः, उपमामूलकसूत्राणि, उपमानोपमेयविचारः, सम्बन्धविचारः, सादृश्यसाधर्म्यपदार्थविचारः, कार्यकारणादिकयोः साधारणधर्मनिराकृतिः, साधारणधर्म-व्यञ्जकत्वविचारः उपमा-उपमालङ्कृत्योर्भेदविचारः, उपमाबोधकविचारः, इत्यादिविषयाः प्रामुख्येण अनुसंहिताः। विशिष्य मम्मटभट्टरीत्या उपमा विचारिता।

उपमायाः प्रथमन्यासविच्छितिः

अर्थालङ्कारेषु प्राथम्येन उपमैव निरूपिता। यद्यपि सादृश्यमूला अलङ्काराः- उपमेयोपमानन्वयप्रतीपस्मरण-रूपकसन्देहतुल्ययोगिता भ्रान्तिमदपहुत्युत्प्रेक्षादृष्टान्तनिदर्शनासमासोक्तिसहोक्ति- व्यतिरेकातिशयोक्तिप्रतिवस्तूपमादीपका-द्यलङ्काराः सन्ति। तथापि तत्र मूलभूततया सौकामार्यातिशयेन चालङ्कारिकैरुपमा समाप्ता। उपमा नाम उत्कृष्टेन सह अनुत्कृष्टस्य तुलनेति। यद्वोत्कृष्टेन गुणवद्वस्तुना सह अनुत्कृष्टगुणवद्वस्तुनस्तुलना उपमा। यथा- सागर सा गम्भीर हृदय हो गिरि सा ऊचा जिसका मन। क्रमेण सागरगिर्युपमाने, हृदयमनस्युपमेये, गम्भीर-ऊचेति साधारणधर्मः सेति उपमाज्ञापकशब्दः। एवमेव हिन्दीकवितालोकगीतगलज्जलिकाचलच्चित्रगीतप्रभृतिषूपमा श्रुतिगोचरा दृष्टिगोचरा भवत्येव पाठकानाम्।

सर्वं वेदात्प्रसिद्धयतीति न्यायात् उपमालङ्कृतेरप्युपजीव्यं वेदादिशास्त्रं भवति ततश्शास्त्रादिदृशोपमोद्भवो विचार्यते-

उपमोदयविचारः

1. वेदे- उषस्सूक्ते जायेव पत्य उशती सुवासा¹ इत्यनेन उपमाप्रयोगः प्राप्यते। तत्र उषाः एकनवसुन्दरीयुवतित्वेन सूर्यश्च तदनुधावनकर्तृत्वेनोपात्तौ। यथा कोपि नायकः कान्तानुसरणन्तदाकृष्टतया विधत्ते तथैव उषसमनुगच्छति भास्वान्।
2. शुक्लयजुर्वेदीयाष्टाध्याय्याम् यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारव्विशिखा इव² इत्यादिनापि उपमा द्रष्टुं शक्या।

¹ ऋग्वेदः-1.124

² शुक्लयजुर्वेद-रुद्राष्टाध्यायी-2.19